Cognitive Thinking: An International Journal of Interdisciplinary Studies
Volume-1, Issue-2 (April-June, 2025), pp.102-113, ISSN: 3107-5088
www.cognitivethinking.in

किन्नर समुदाय के शैक्षिक अनुभवों का अध्ययन

रोहित
शोधार्थी
समाजशास्त्र विभाग
एस.एस.वी. कॉलेज, हापुड़

शोध–सार: प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने किन्नरों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि एवं उनके शैक्षिक अनुभव का प्रयास किया है। यह शोध उत्तर प्रदेश राज्य के गाजियाबाद जिले में किया गया है तथा शोध के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हिमकुंदक विधि से 200 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। अध्ययन में यह पाया गया है कि किन्नर समुदाय भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हुए भी लंबे समय तक सामाजिक मुख्यधारा से अलग–थलग रहा है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश किन्नर गरीबी, अस्थिर आय और सीमित रोजगार अवसरों से जूझ रहे हैं तथा आज भी पारंपरिक पेशों जैसे बधाई देना, नृत्य–गान और भिक्षावृत्ति पर निर्भर हैं। आधुनिक शिक्षा और तकनीकी कौशल की कमी ने उनकी आर्थिक प्रगति के अवसरों को अत्यंत सीमित कर दिया है। पारिवारिक बहिष्कार और सामाजिक अस्वीकृति के कारण वे भावनात्मक और मानसिक रूप से भी असुरक्षित महसूस करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी संख्या में किन्नर प्राथमिक स्तर से आगे पढ़ाई नहीं कर पाते, क्योंकि विद्यालयों में भेदभाव, सहपाठियों व शिक्षकों द्वारा उपहास और पारिवारिक सहयोग की कमी उन्हें पढ़ाई छोड़ने पर मजबूर कर देती है। शिक्षा का अभाव न केवल उनके व्यक्तिगत विकास को बाधित करता है, बल्कि सम्मानजनक रोजगार और बेहतर जीवन–स्तर की संभावनाओं को भी प्रभावित करता है। अतः उनकी स्थिति सुधारने हेतु शिक्षा में विशेष योजनाएँ, सुरक्षित शैक्षिक वातावरण, कौशल विकास कार्यक्रम, समान रोजगार अवसर तथा सरकारी व निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है, जिससे वे आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से सशक्त बन सकें।

मुख्य बिन्दु: किन्नर, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक बहिष्कार।

प्रस्तावना

भारत में किन्नर समुदाय की इस सांस्कृतिक–संश्लिष्ट वंशावली को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि कोई अलग–थलग किन्नर संस्कृति और पहचान प्राचीन समय से ही स्पष्ट रूप से परिभाषित प्रथाओं और रीतियों के साथ अस्तित्व में नहीं रही। इसके अलावा, समुदाय की उत्पत्ति और वंशावली को ठीक–ठीक पहचानने वाला साहित्य भी नहीं मिलता। हालाँकि 'तीसरे लिंग', समान–लिंगी यौनिकताओं और लैंगिक संक्रमण की उपस्थिति का उल्लेख मिलता है और मिथकों व मौखिक परंपराओं में सेक्स और जेंडर की अस्पष्टताओं का वर्णन भी मिलता है, फिर भी किसी एक एकीकृत किन्नर समुदाय और उसकी पहचान को प्राचीन काल में सटीक रूप से निर्धारित करना कठिन है।

जननांग विकृति और शाही घरानों में नपुंसकों के शोषण की उत्पत्ति वैदिक काल तक पीछे खोजी जा सकती है। उदाहरणस्वरूप वैदिक काल में किन्नरों/हिजड़ों का उपयोग सम्राटों और अभिजात्य वर्ग के सदस्यों को उपहारस्वरूप दिया जाता था। लेखक ने वात्स्यायन का भी उल्लेख किया है, जिन्होंने इस प्रथा की ओर संकेत किया कि हरमों में सेवा करने वाले किन्नरों/हिजड़ों की जीभ काट दी जाती थी। **(चेनी, 2006)**

हालाँकि, मुग़ल आक्रमण ने नपुंसकों के प्रयोग को व्यवस्थित और औपचारिक बना दिया। उन्हें शाही घरानों का कार्यात्मक हिस्सा बना दिया गया। किन्नर दासों को शारीरिक रूप से विकृत कर हरमों में सेवा के लिए रखा जाता था। कुछ नपुंसक अत्यंत विश्वसनीय बन गए और अपने शाही संरक्षकों के अधीन सत्ता के पदों पर आसीन

हुए। उनकी नपुंसकता ने उन्हें शासकों के निजी रहस्यों तक पहुँच प्रदान की, जिससे उन्हें विश्वास और निष्ठा मिली और कई बार वे उनके निजी सलाहकार और विश्वासपात्र के रूप में भी कार्य करने लगे। **(जाफरी, 1996)**

यह स्पष्ट है कि बदलते ऐतिहासिक कालखंड और संस्कृतियाँ (प्राचीन भारत और मुग़ल काल) जननांग असमानताओं, गैर–मानक लिंग और यौन इच्छाओं के बारे में भिन्न–भिन्न मान्यताएँ और धारणाएँ उत्पन्न करती रहीं। निस्संदेह, प्राचीन स्रोत, मध्यकालीन साहित्य और पौराणिक ग्रंथ नपुंसकों, ख्वाजासराओं और अशक्त व्यक्तियों की व्याख्या विविध तरीकों से करते हैं, जिससे किन्नर पहचान और संस्कृति की एकल सामाजिक–सांस्कृतिक उत्पत्ति को रेखांकित करना और उनके ऐतिहासिक विकासक्रम को सटीक रूप से पहचानना और अधिक कठिन हो जाता है।

साहित्य समीक्षा

मेघानी, एच. एवं पाटिल, जी. (2025) द्वारा किया गया अध्ययन "गुजरात के वडोदरा शहर में ट्रांसजेंडर की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति" का उद्देश्य स्थानीय स्तर पर ट्रांसजेंडर समुदाय की जीवन परिस्थितियों, चुनौतियों और अवसरों को समझना था। यह अध्ययन समाजशास्त्र और क्षेत्रीय विकास के क्षेत्र में किया गया। शोधकर्ताओं ने क्षेत्र सर्वेक्षण, साक्षात्कार और अवलोकन विधियों का प्रयोग किया। अध्ययन में शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, आवास और सांस्कृतिक गतिविधियों पर विशेष ध्यान दिया गया। शोध से ज्ञात हुआ कि वडोदरा शहर में ट्रांसजेंडर समुदाय अब भी मुख्यधारा से दूर है। शिक्षा एवं रोजगार में अवसर सीमित हैं और अधिकांश लोग अनौपचारिक या असुरक्षित कार्यों में लगे हैं। स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच सीमित है और सामाजिक कलंक मानसिक स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डालता है। सकारात्मक पक्ष यह मिला कि कुछ सामुदायिक संगठन और एनजीओ प्रशिक्षण और जागरूकता के कार्यक्रम चला रहे हैं। शोध ने सुझाव दिया कि नगर निगम और राज्य सरकार ट्रांसजेंडर–हितैषी नीतियाँ बनाएँ, शिक्षा व कौशल विकास में निवेश करें, और स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुँच सुनिश्चित करें।

कबीराज, बी. (2024) ने शिक्षा के महत्व को ट्रांसजेंडर समुदाय के जीवन–निर्वाह और सामाजिक सशक्तिकरण से जोड़कर देखा। अध्ययन का उद्देश्य था कि ओडिशा के कंधमाल जिले में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ता है। शोध के लिए प्रायोगिक पद्धति का उपयोग किया गया। फील्ड सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार के माध्यम से ट्रांसजेंडर प्रतिभागियों से डाटा एकत्रित किया गया।

निष्कर्षों में पाया गया कि शिक्षा के अभाव के कारण ट्रांसजेंडर लोग स्थायी रोजगार नहीं पा पाते और उन्हें भीख माँगने, नाचने–गाने या असुरक्षित पेशों की ओर झुकना पड़ता है। शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को समाज में अधिक सम्मान और आत्मनिर्भरता मिलती है।

आचार्य, मिली (2024) ने हिजड़ा समुदाय की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का केस स्टडी प्रस्तुत किया। प्रायोगिक पद्धति अपनाते हुए टारकेश्वर लोकल ट्रेन मार्ग में हिजड़ा समुदाय के लोगों से डेटा संकलित किया गया।

शोधकर्ता ने पाया कि हिजड़ों को शिक्षा और रोजगार के अवसर लगभग नहीं मिलते। अधिकतर लोग भीख माँगने और ट्रेनों में पारंपरिक प्रदर्शन पर निर्भर रहते हैं। आर्थिक असुरक्षा और सामाजिक अस्वीकृति ने उनके जीवन स्तर को निम्न बनाए रखा है। शोधकर्ता ने सिफारिश दी कि रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण, विशेष शिक्षा योजनाएँ, और समाज में संवेदनशीलता बढ़ाने की आवश्यकता है।

सिंह, वी. के. एवं बाजपेयी, ए. (2022) द्वारा किया गया अध्ययन "ट्रांसजेंडर की शिक्षाः समस्याएँ और सुझाव" का उद्देश्य ट्रांसजेंडर समुदाय के लिए शिक्षा की पहुँच, बाधाओं और सुधार के उपायों का अध्ययन करना था। शोधकर्ताओं ने सर्वेक्षण और साहित्य समीक्षा के माध्यम से डेटा एकत्र किया। अध्ययन में पाया गया कि ट्रांसजेंडर बच्चों और युवाओं को विद्यालय में भेदभाव, उत्पीड़न और अस्वीकृति का सामना करना पड़ता है। सामाजिक कलंक और परिवार की अस्वीकार्यता भी शिक्षा में बाधा बनती है। अध्ययन ने यह भी बताया कि शिक्षक प्रशिक्षण की कमी और पाठ्यक्रम में समावेशी दृष्टिकोण का अभाव समस्या को बढ़ाता है। यह अध्ययन बताता है कि समावेशी शिक्षा नीतियों और सामाजिक समर्थन के बिना ट्रांसजेंडर समुदाय को समान अवसर देना संभव नहीं। सुझाव दिया गया कि सरकार और शैक्षणिक संस्थान ट्रांसजेंडर छात्रों के लिए सुरक्षित वातावरण, छात्रवृत्ति और परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराएँ। शिक्षकों को संवेदनशीलता प्रशिक्षण दिया जाए और पाठ्यक्रम में लिंग विविधता को शामिल किया जाए।

चटर्जी, एस. (2018) का अध्ययन "भारत में ट्रांसजेंडर समुदाय द्वारा झेली जाने वाली समस्याएँ: कुछ अनुशंसाएँ" ट्रांसजेंडर समुदाय की सामाजिक, आर्थिक व मानसिक चुनौतियों पर केंद्रित है। अध्ययनकर्ता ने शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, परिवार व समाज में स्वीकृति के मुद्दों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया। शोध पद्धति के रूप में साहित्य समीक्षा, केस स्टडी और फील्ड ऑब्जर्वेशन को अपनाया गया। अध्ययन में पाया गया कि भेदभाव, हिंसा, स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच और कानूनी पहचान की कठिनाइयाँ इस समुदाय के जीवन को प्रभावित करती हैं। सकारात्मक पहल के रूप में हाल के कानूनी फैसलों और सरकारी योजनाओं को भी दर्शाया गया। अध्ययनकर्ता ने सुझाव दिया कि रोजगार आरक्षण, स्वास्थ्य बीमा, जागरूकता अभियान, कौशल विकास और शिक्षा में विशेष सहायता प्रदान की जाए।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. किन्नरों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. किन्नरों के शैक्षिक अनुभव का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि एवं अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों के आधार पर शोध की प्रविधि का ढ़ाँचा वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य का गाजियाबाद जिला है। शोध के उद्देश्य की पूर्ति हेतु हिमकुंदक विधि से 200 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है।

परिणाम एवं चर्चा

शोध के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एकत्र किये गये आँकडों का विश्लेषण निम्न प्रकार है

1. किन्नरों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि

सारणी संख्या 1.1 से 1.11 में किन्नरों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करने के लिए उनकी आयु, लैंगिक पहचान, धर्म, जाति श्रेणी, शैक्षिक योग्यता, व्यवसाय, आय (दैनिक), पारिवारिक ढ़ाँचा, वैवाहिक स्थिति, सन्तान तथा आवासीय स्थिति के सम्बन्ध में तथ्यों का विश्लेषण और व्याख्या की गई है।

सारणी संख्या – 1.1

आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	आयु	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	18-25	38	19.00%
2	26-35	40	20.00%
3	36-45	65	32.50%
4	46-60	39	19.50%
5	60+	18	09.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 1.1 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं के आयु समूह को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 38 उत्तरदाता 18–25 वर्ष आयु वर्ग के है। 40 उत्तरदाता 26–35 वर्ष आयु वर्ग के है, 65 उत्तरदाता 36–45 वर्ष आयु वर्ग के है, 39 उत्तरदाता 46–60 वर्ष आयु वर्ग के है, तथा 18 उत्तरदाता 60 से अधिक वर्ष आयु वर्ग के है। अतः परिणाम दर्शाते है कि उत्तरदाताओं का बड़ा भाग (32.50%) 36–45 वर्ष आयु वर्ग का है, जबकि न्यूनतम भाग (09.00%) 60 से अधिक आयु वर्ग का है।

सारणी संख्या – 1.2

लैंगिक पहचान के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	लैंगिक पहचान	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	पुरुष किन्नर	146	73.00%
2	महिला किन्नर	54	27.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 1.2 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं की लैंगिक पहचान को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 146 उत्तरदाता पुरुष किन्नर हैं, तथा 54 उत्तरदाता महिला किन्नर हैं। उत्तरदाताओं से जानकारी के आधार पर पाया गया कि अधिकांश पुरुष किन्नर अपनी समलैंगिक प्रवृत्ति तथा बेरोजगारी के कारण सर्जरी के माध्यम से अपने गुप्तांग को कटवाकर किन्नर बने हैं।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाता (73.00%) पुरुष किन्नर हैं, जबकि न्यूनतम उत्तरदाता (27. 00%) महिला किन्नर हैं।

सारणी संख्या – 1.3

धर्म के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	धर्म	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हिन्दू	64	32.00%
2	मुस्लिम	136	68.00%
3	अन्य	00	00.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 1.3 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं के धर्म को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 64 उत्तरदाता हिन्दू हैं, 136 उत्तरदाता मुस्लिम हैं, तथा कोई उत्तरदाता अन्य धर्म से सम्बन्धित नहीं है।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाता (68%) मुस्लिम धर्म से हैं, जबकि न्यूनतम उत्तरदाता (32%) हिन्दू धर्म से है।

सारणी संख्या – 1.4

जाति श्रेणी के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	जाति श्रेणी	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सामान्य वर्ग	86	43.00%
2	अन्य पिछड़ा वर्ग	70	35.00%
3	अनुसूचित जाति	44	22.00%
4	अनुसूचित जनजाति	00	00.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 1.4 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं की जाति श्रेणी को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 86 उत्तरदाता सामान्य वर्ग के हैं, 70 उत्तरदाता अन्य पिछड़ा वर्ग के हैं, 44 उत्तरदाता अनुसूचित जाति वर्ग के हैं तथा कोई भी उत्तरदाता अनुसूचित जनजाति वर्ग से सम्बन्धित नहीं है।

अतः परिणाम दर्शाते है कि उत्तरदाताओं का बड़ा भाग (43.00%) सामान्य वर्ग से हैं, जबकि उत्तरदाताओं का न्यूनतम भाग (22.00%) अनुसूचित जाति वर्ग से हैं।

सारणी संख्या – 1.5

शैक्षिणिक योग्यता के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	शिक्षा का स्तर	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	1–5	72	36.00%
2	6–10	30	15.00%
3	12	56	28.00%
4	स्नातक	07	03.50%
5	अनपढ़	35	17.50%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 1.5 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं की शैक्षिक स्थिति को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 72 उत्तरदाता 1–5 कक्षा तक पढ़े हैं, 30 उत्तरदाता 6–10 कक्षा तक पढ़े हैं, 56 उत्तरदाता 12वीं कक्षा तक पढ़े हैं, 07 उत्तरदाता स्नातक तक पढ़े है तथा 35 उत्तरदाता अनपढ़ हैं। उत्तरदाताओं से जानकारी के आधार पर यह पाया गया कि अधिकांश उत्तरदाताओं के अनपढ़ अथवा कम पढ़े लिखे होने का मुख्य कारण उनका पढ़ाई में मन न लगना तथा विद्यालय जाने पर सामाजिक भेदभाव है।

अतः परिणाम दर्शाते है कि उत्तरदाताओं का बड़ा भाग (36.00%) कक्षा 1–5 तक पढ़े हैं, जबकि उत्तरदाताओं का न्यूनतम भाग (03.50%) स्नातक कक्षा तक पढ़े हैं।

सारणी संख्या – 1.6

व्यवसाय के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

:स.	व्यवसाय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सरकारी नौकरी	00	00.00%
2	निजी नौकरी	00	00.00%
3	यौन–कर्मी	68	34.00%
4	बधाई देना	132	66.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 1.6 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं के व्यवसाय को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से कोई भी उत्तरदाता सरकारी नौकरी तथा निजी नौकरी में नहीं हैं, 68 उत्तरदाता यौन–कर्मी हैं, तथा 132 उत्तरदाता मांगलिक अवसरो पर बधाई देने का कार्य करते हैं। उत्तरदाताओं से जानकारी के आधार पर यह भी पाया गया कि अधिकांश उत्तरदाता बधाई देने के साथ–साथ यौन–कर्मी (Sex Worker) का कार्य भी करते

है। अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाता (66.00%) उत्तरदाता बधाई देने का कार्य करते है। जबकि न्यूनतम उत्तरदाता (34.00%) यौन–कर्मी का कार्य करते हैं।

सारणी संख्या – 1.7

दैनिक आय के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

:स.	निक आय (रूपये में)	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	5000 से कम	40	20.00%
2	5000–10000	70	35.00%
3	10000–20000	34	17.00%
4	20000–50000	31	15.50%
5	50000 से अधिक	25	12.50%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 1.7 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं के आय को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 40 उत्तरदाता रु. 5000 प्रतिदिन आय वर्ग के हैं, 70 उत्तरदाता रु. 5000–10000 प्रतिदिन आय वर्ग के हैं, 34 उत्तरदाता रु. 10000–20000 प्रतिदिन आय वर्ग के हैं, 31 उत्तरदाता रु. 20000–50000 प्रतिदिन आय वर्ग के हैं तथा 25 उत्तरदाता रु. 50000 से अधिक प्रतिदिन आय वर्ग के हैं। उत्तरदाताओं से जानकारी के आधार पर यह पाया गया कि उत्तरदाताओं के द्वारा प्रतिदिन की आय का बड़ा भाग बधाई के माध्यम से आता है।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (35.00%) की दैनिक आय रु. 5000 है, जबकि न्यूनतम उत्तरदाताओं (12.50%) की दैनिक आय रु. 50000 से अधिक है।

सारणी संख्या – 1.8

पारिवारिक ढ़ाँचे के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

:स.	पारिवारिक ढ़ाँचा	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	परिवार के साथ	45	22.50%
2	गुरू के साथ डेरे में	140	70.00%
3	अकेले	15	07.50%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 1.8 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं के पारिवारिक ढाँचे को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 45 उत्तरदाता अपने परिवार के साथ रहते हैं, 140 उत्तरदाता अपने गुरू के साथ डेरे में रहते हैं, तथा 15 उत्तरदाता अकेले रहते हैं। उत्तरदाताओं से जानकारी के आधार पर यह पता चला कि अधिकांश उत्तरदाता जो गुरू के साथ डेरे में रहते है कभी–कभी व त्यौहारों एवं सामाजिक अवसरों पर अपने परिवार के पास भी जाते रहते हैं।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाता (70.00%) अपने गुरू के साथ डेरे में रहते हैं, जबकि न्यूनतम उत्तरदाता (07.50%) अकेले रहते हैं।

सारणी संख्या – 1.9

वैवाहिक स्थिति के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

:स.	वैवाहिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	अविवाहित	112	56.00%
2	विवाहित	78	39.00%
3	तलाकशुदा	10	05.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 1.9 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 112 उत्तरदाता अविवाहित हैं, 78 उत्तरदाता विवाहित हैं, तथा 10 उत्तरदाता तलाकशुदा हैं। उत्तरदाताओं से जानकारी के आधार पर पता चला कि कुछ अविवाहित उत्तरदाता लिव–इन–रिलेशनशिप में रहते हैं।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाता (56.00%) अविवाहित हैं, जबकि न्यूनतम उत्तरदाता (05.00%) तलाकशुदा हैं।

सारणी संख्या – 1.10

सन्तान के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

:स.	सन्तान	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	58	29.00%
2	नहीं	142	71.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 1.10 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं की सन्तान की जानकारी को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 58 के सन्ताने हैं, तथा 142 उत्तरदाताओं की सन्तान नहीं हैं। उत्तरदाताओं से जानकारी के आधार पर पता चला कि जिन उत्तरदाताओं की सन्ताने हैं उनमें से कुछ ने सन्तानों को गोद लिया हुआ है तथा कुछ पुरुष किन्नर उत्तरदाता किन्नर बनने से पूर्व वैवाहिक जीवन में रहते थे जिनकी सन्तानें हैं।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (71.00%) के सन्तान नहीं हैं, जबकि न्यूनतम उत्तरदाताओं (29.00%) की सन्तान हैं।

सारणी संख्या – 1.11

आवासीय स्थिति के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

:स.	आवासीय स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	अपना आवास	120	60.00%
2	किराए का आवास	80	40.00%
3	बेघर	00	00.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 1.11 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं की आवासीय स्थिति को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 120 उत्तरदाताओं के पास अपना आवास हैं, 80 उत्तरदाता किराए के आवास में रहते हैं, तथा कोई भी उत्तरदाता बेघर नहीं हैं।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाता (60.00%) के पास अपना आवास हैं, जबकि न्यूनतम उत्तरदाता (40.00%) किराए के आवास में रहते हैं।

2. किन्नरों का शैक्षिक अनुभव

सारणी संख्या 2.1 से 2.8 में किन्नरों के शैक्षिक अनुभव का अध्ययन करने के लिए उत्तरदाताओं की शैक्षिक उपलब्धि, शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाई, शैक्षिक अनुभव, शिक्षणकाल में छेड़छाड़/उत्पीड़न, शिक्षा में परिवार का सहयोग, शिक्षा के लिए मार्गदर्शक/प्रेरणास्रोत, किन्नरों के लिए शिक्षा सुलभ होने की धारणा तथा किन्नरों की सामाजिक स्थिति सुधारने में शिक्षा के सहायक होने के बारे में धारणा के सम्बन्ध में तथ्यों का विश्लेषण और व्याख्या की गई है।

सारणी संख्या – 2.1

शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	शैक्षिक उपलब्धि	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	अनपढ़	35	17.50%
2	प्राथमिक	72	36.00%
3	उच्च प्राथमिक	30	15.00%
4	हाईस्कूल	40	20.00%
5	इण्टरमीडिएट	16	08.00%
6	स्नातक	07	03.50%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 2.1 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं की उच्चतम शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 35 उत्तरदाता अनपढ़ हैं, 72 उत्तरदाताओं की शैक्षिक उपलब्धि प्राथमिक स्तर तक हैं, 30 उत्तरदाताओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च प्राथमिक स्तर तक हैं, 40 उत्तरदाताओं की शैक्षिक उपलब्धि हाईस्कूल स्तर तक हैं, 16 उत्तरदाताओं की शैक्षिक उपलब्धि इण्टरमीडिएट स्तर तक हैं तथा 07 उत्तरदाताओं की शैक्षिक उपलब्धि स्नातक स्तर तक है। अतः परिणाम दर्शाते है कि उत्तरदाताओं का बड़ा भाग (36.00%) की उच्चतम शैक्षिक उपलब्धिक प्राथमिक स्तर तक हैं, जबकि उत्तरदाताओं के न्यूनतम भाग (03.50%) की शैक्षिक उपलब्धि स्नातक स्तर तक है।

सारणी संख्या – 2.2

शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाईयों के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाईयाँ	त्तरदाताओं की संख्या	तिशत
1	हाँ	144	7.00%
2	नहीं	46	3.00%
	कुल योग	**200**	**00%**

सारणी 2.2 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं को शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाईयों को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 144 उत्तरदाताओं को शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाई हुई, तथा 46 उत्तरदाताओं को शिक्षा प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। उत्तरदाताओं से जानकारी के आधार पर पता चला कि शिक्षा प्राप्त करने में आयी कठिनाईयों में मुख्यतः पढ़ाई में मन न लगना, सहपाठियों एवं समाज द्वारा भेदभाव/दुर्व्यवहार कारण रहे हैं।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (77.00%) को शिक्षा प्राप्त करने में कठिनाई हुई, जबकि न्यूनतम उत्तरदाताओं (23.00%) को शिक्षा प्राप्त करने में कोई कठिनाई नही हुई।

सारणी संख्या – 2.3

शैक्षिक अनुभव के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	शैक्षिक अनुभव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	सकारात्मक	40	20.00%
2	नकारात्मक	124	62.00%
3	सामान्य	36	18.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 2.3 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं को शैक्षिक अनुभाव को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 40 उत्तरदाताओं का शैक्षिक अनुभव सकारात्मक हैं, 124 उत्तरदाताओं का शैक्षिक अनुभव नकारात्मक है, तथा 36 उत्तरदाताओं का शैक्षिक अनुभव सामान्य है।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (62.00%) का शैक्षिक अनुभव नकारात्मक है, जबकि न्यूनतम उत्तरदाताओं (18.00%) का शैक्षिक अनुभव सामान्य है।

सारणी संख्या – 2.4

शिक्षणकाल में छेड़छाड़/उत्पीड़न के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	काल में छेड़छाड़/उत्पीड़न	तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	93	46.50%
2	नहीं	97	48.50%
3	कभी–कभी	10	05.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 2.4 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं के शिक्षणकाल में छेड़छाड/उत्पीड़न को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 93 उत्तरदाताओं को शिक्षणकाल में छेड़छाड़/उत्पीड़न का सामना करना पड़ा, 97 उत्तरदाताओं को शिक्षणकाल में छेड़छाड़/उत्पीड़न का सामना नहीं करना पड़ा तथा 10 उत्तरदाताओं को शिक्षणकाल में छेड़छाड़/उत्पीड़न का सामना कभी–कभी करना पड़ा।

अतः परिणाम दर्शाते है कि उत्तरदाताओं के बडे भाग (48.50%) को शिक्षणकाल में छेड़छाड़/उत्पीड़न का सामना नहीं करना पड़ा, जबकि उत्तरदाताओं के छोटे भाग (05.00%) को शिक्षणकाल में छेड़छाड/उत्पीड़न का सामना कभी–कभी करना पड़ा।

सारणी संख्या – 2.5

परिवार का शिक्षा में सहयोग के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	परिवार का शिक्षा में सहयोग	त्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	आर्थिक सहयोग	90	45.00%
2	भावनात्मक सहयोग	86	43.00%
3	कोई सहयोग नहीं	24	12.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 2.5 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं के परिवार का शिक्षा में सहयोग को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 90 उत्तरदाताओं के परिवार का शिक्षा में आर्थिक सहयोग रहा, 86 उत्तरदाताओं के परिवार का शिक्षा में भावनात्मक सहयोग रहा तथा 24 उत्तरदाताओं के परिवार का शिक्षा में कोई सहयोग नहीं रहा।

अतः परिणाम दर्शाते है कि उत्तरदाताओं के बडे भाग (45.00%) को परिवार का शिक्षा में आर्थिक सहयोग रहा है, जबकि उत्तरदाताओं के छोटे भाग (12.00%) को परिवार का शिक्षा में कोई सहयोग नहीं रहा है।

सारणी संख्या – 2.6

शिक्षा के लिए मार्गदर्शक/प्रेरणास्रोत के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	शिक्षा के लिए र्गदर्शक/प्रेरणास्रोत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	19	09.50%
2	नहीं	181	90.50%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 2.6 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं की शिक्षा के लिए मार्गदर्शक/प्रेरणास्रोत को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 19 उत्तरदाताओं के शिक्षा के लिए मार्गदर्शक/प्रेरणास्रोत थे तथा 181 उत्तरदाताओं के शिक्षा के लिए मार्गदर्शक/प्रेरणास्रोत नहीं थे।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (90.50%) के शिक्षा के लिए मार्गदर्शक/प्रेरणास्रोत नहीं थे, जबकि न्यूनतम उत्तरदाताओं (09.50%) के शिक्षा के लिए मार्गदर्शक/प्रेरणास्रोत थे।

सारणी संख्या – 2.7

किन्नरों के लिए शिक्षा सुलभ होने की धारणा के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	के लिए शिक्षा सुलभ होने की धारणा	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	70	35.00%
2	नहीं	115	57.50%
3	कुछ हद तक	15	07.50%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 2.7 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं की किन्नरों के लिए शिक्षा सुलभ होने की धारणा को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 70 उत्तरदाताओं की धारणा यह है कि किन्नरों के लिए शिक्षा सुलभ है, 115 उत्तरदाताओं की धारणा यह है कि किन्नरों के लिए शिक्षा सुलभ नहीं है तथा 15 उत्तरदाताओं की धारणा यह है कि किन्नरों के लिए शिक्षा कुछ हद तक सुलभ है। उत्तरदाताओं से जानकारी के आधार पर पता चलता है कि उनके लिए शिक्षा प्राप्त करना सुलभ नहीं है क्योंकि सरकार द्वारा सहायता देने के उपरान्त भी सामाजिक बहिष्कार के कारण शिक्षा प्राप्त करना सुलभ नहीं है।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (57.50%) की धारणा यह है कि किन्नरों के लिए शिक्षा सुलभ नहीं है, जबकि न्यूनतम उत्तरदाताओं (07.50%) की धारणा यह है कि किन्नरों के लिए शिक्षा कुछ हद तक सुलभ है।

सारणी संख्या – 2.8

किन्नरों की सामाजिक स्थिति सुधारने में शिक्षा का योगदान के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

क्र.स.	ों की सामाजिक स्थिति सुधारने में शिक्षा का योगदान	ाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	12	06.00%
2	नहीं	152	76.00%
3	कुछ हद तक	36	18.00%
	कुल योग	**200**	**100%**

सारणी 2.8 इस अध्ययन के लिए उत्तरदाताओं के अनुसार किन्नरों की सामाजिक स्थिति सुधारने में शिक्षा का योगदान को दर्शाती है। सारणी दर्शाती है कि 200 उत्तरदाताओं में से 12 उत्तरदाताओं के अनुसार किन्नरों की सामाजिक स्थिति सुधारने में शिक्षा का योगदान है, 152 उत्तरदाताओं के अनुसार किन्नरों की सामाजिक स्थिति सुधारने में शिक्षा का योगदान नहीं है तथा 36 उत्तरदाताओं के अनुसार किन्नरों की सामाजिक स्थिति सुधारने में शिक्षा का योगदान कुछ हद तक है।

अतः परिणाम दर्शाते है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (76.00%) के अनुसार किन्नरों की सामाजिक स्थिति सुधारने में शिक्षा का योगदान नहीं है, जबकि न्यूनतम उत्तरदाताओं (06.00%) के अनुसार किन्नरों की सामाजिक स्थिति सुधारने में शिक्षा का योगदान है।

निष्कर्ष

किन्नर समुदाय भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, किंतु इतिहास से लेकर आज तक उन्हें सामाजिक मुख्यधारा से अलग–थलग रखा गया है। प्रस्तुत शोध में किन्नरों के सामाजिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य में यह सामने आया कि अधिकांश किन्नर गरीबी, अस्थिर आय और सीमित रोजगार अवसरों से जूझ रहे हैं। पारंपरिक पेशों जैसे बधाई देना, नृत्य–गान और भिक्षावृत्ति पर उनकी निर्भरता आज भी बनी हुई है। आधुनिक शिक्षा और तकनीकी कौशल की कमी ने उनकी आर्थिक प्रगति के अवसरों को बहुत सीमित कर दिया है। पारिवारिक बहिष्कार और समाज में अस्वीकृति ने उन्हें भावनात्मक और मानसिक रूप से भी असुरक्षित बना दिया है। शिक्षा के क्षेत्र में यह पाया गया कि बड़ी संख्या में किन्नर प्राथमिक स्तर से आगे की पढ़ाई नहीं कर पाते। विद्यालयों में असमान व्यवहार, सहपाठियों और शिक्षकों द्वारा उपहास, तथा पारिवारिक सहयोग की कमी उन्हें पढ़ाई छोड़ने के लिए बाध्य करती है। शिक्षा का अभाव न केवल उनके व्यक्तिगत विकास को बाधित करता है बल्कि उनके लिए सम्मानजनक रोजगार और जीवन–स्तर को भी प्रभावित करता है।

सुझाव

●किन्नर समुदाय की स्थिति में सुधार लाने हेतु बहुआयामी प्रयासों की आवश्यकता है। सबसे पहले ''शिक्षा'' के क्षेत्र में विशेष योजनाएँ बनानी होंगी, जिससे किन्नरों को प्रारंभिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक समान अवसर मिल सके। विद्यालयों और महाविद्यालयों में उनके लिए सुरक्षित वातावरण तैयार करना अनिवार्य है।

●रोजगार के क्षेत्र में सरकार और निजी संस्थानों को समान अवसर प्रदान करने चाहिए। कौशल विकास कार्यक्रम और व्यावसायिक प्रशिक्षण से वे आत्मनिर्भर बन सकते हैं। इसके अतिरिक्त आरक्षण अथवा विशेष प्रोत्साहन योजनाएँ भी उनकी भागीदारी बढ़ा सकती हैं।

संदर्भ सूची

1. जी. रेड्डी (2006). विद रिस्पेक्ट टू सेक्सः नेगोशिएटिंग हिजड़ा आइडेंटिटी इन साउथ इंडिया. योदा प्रेस.
2. जिया जाफरी (1996). दि इनविज़िबल्सः अ टेल ऑफ द यूनक्स ऑफ इंडिया. न्यूयॉर्क, पैनथियन बुक्स, पेज 148.
3. एड्रियन कृष्णासामी एवं पेशन्स ए. असाफू–अजाये (2024). एक्सप्लोरिंग द सोशल रियलिटीज ऑफ हिजड़ाज़ इन इंडियाः चैलेंजिज, रेज़ाइलेंस, एण्ड पाथवेज़ टू इन्क्लूज़न, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जेंडर एण्ड वीमेन्स स्टडीज़, वॉल्यूम 12, पेज 1–8. DOI: 10.15640/ijgws.v12a1 URL: https://doi.org/10.15640/ijgws.v12a1
4. हर्षा मेघानी एवं डॉ. गौतम पाटिल (2025). अ स्टडी ऑफ "सोशल, इकोनॉमिक और कल्चरल स्टेटस ऑफ ट्रांसजेंडर इन वडोदरा सिटी ऑफ गुजरात". इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एंड रिव्यूज़, वॉल्यूम 6(4), पेज 1521–1531. DOI: https://doi.org/10.55248/gengpi.6.0425.1362
5. विकास कुमार सिंह एवं डॉ. अंजली बाजपाई (2022). एजुकेशन ऑफ ट्रांसजेंडर्सरू प्रॉब्लम्स एंड सजेस्ट्शन्स. जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज़ एंड इनोवेटिव रिसर्च JETIR), 9(7), C204–C218. www.jetir.org
6. हर्षा मेघानी एवं डॉ. गौतम पाटिल (2025). अ स्टडी ऑफ "सोशल, इकोनॉमिक और कल्चरल स्टेटस ऑफ ट्रांसजेंडर इन वडोदरा सिटी ऑफ गुजरात". इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एंड रिव्यूज़, वॉल्यूम 6(4), पेज 1521–1531. DOI: https://doi.org/10.55248/gengpi.6.0425.1362
7. कबीराज बेहेरा (2024). एजुकेशन इज़ एन एसेंशियल टूल फॉर सर्वाइवलिटीः एन एम्पिरिकल स्टडी ऑफ ट्रान्सजेंडर इन कन्धमाल डिस्ट्रिक्ट ऑफ ओडिशा. सोसाइटी एण्ड कल्चर डेवलपमेंट इन इंडिया, 4(2), पेज 275–308. https://doi.org/10.47509/S CDI.2024.v04i02.04